जापान
भारती

अंक २ | विक्रम संवत् २०५२ | अप्रैल १९९५

भारतीय

नववर्ष

संवत् २०५२

गुड़ी पाड़वा

चैती चंद

की

शुभकामनाएं

इस अंक में
*

हमारा पन्ना
आपका पन्ना
प्रतिक्रिया
श्रद्धांजलि
पर्व
सम्मान
काव्यधारा
क्राई
बाङ्ला
बचपन
विविध

तनोतु मंगल कामं, नववर्ष समागते ।
सहस्त्र शीर्षः पुरुषः, सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।।

❄❄

जापान भारती का दूसरा अंक आपके हाथों में है । प्रवेशांक में जो कुछ कमियां रह गई थीं उन्हें सुधारने का प्रयास तो किया है। हम अपने इस प्रयास में कहाँ तक सफल हो रहे हैं इसके लिए आपकी लिखित प्रतिक्रिया आवश्वयक है ।

हिन्दी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं के लेखकों और पाठकों को हमसे जोड़ने में सहायता कीजिए ।

प्रवेशांक पर मिली कुछ प्रतिक्रयाएँ प्रकाशित कर रहे हैं । आप सब से विनम्र अनुरोध है कि अपनी रचनाएँ और लिखित प्रतिक्रयाएँ भेज कर जापान भारती का साथ दीजिए । अन्यथा इसे आगे कैसे बढ़ाया जा सकेगा ? हम ये भी जानना चाहते हैं कि पत्रिका आप तक पहुँच रही है या नहीं ? आशा है आप इतना तो अवश्य बताएंगें ।

भारतीय नववर्ष

विक्रम संवत् २०५२

मंगलमय हो!!

जापान
भारती

संयोजक

सौरभ सिंघल
रंजन कुमार

सलाह-सहयोग

अखिल मित्तल
रंजन गुप्त (রঞ্জন গুপ্ত, বাংলা)
सुशील जैन

पता

२०८, मैंशन न्यू ताकानावा
२-१०-१५ ताकानावा
मिनातो कू
तोक्यो १०८

फोन/फैक्स/ई-मेल

सौरभ : ०३-३४६२-०८५३
singals@ml.com
रंजन : ०३-३४७३-६०४३
ranjan@twics.com

-१-

जापान भारती का प्रवेशांक सराहनीय है । हिंदी के साथ साथ तमिल और बंगला रचनाओं के प्रकाशन ने इसे सचमुच भारती बना दिया है । सभी भाषाओं में लिखी गई रचनाओं के प्रकाशन के निमंत्रण से उदार दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है । मिवाको कोएजुका का संस्मरण ' हिंदीमय' बहुत रोचक और ज्ञानवर्द्धक है । उन्हें मेरी बधाई ।

प्रो. ओम्प्रकाश सिंहल, चीन

-२-

सबसे पहले जापान भारती के प्रकाशन पर आपको मेरी बधाई । इसका प्रकाशन और सामग्री काफी अच्छे स्तर के हैं । अगर इस प्रयास मे आपको मेरी किसी भी सहायता की जरूरत हो, तो मै सदैव उपलब्ध हूँ । आशा है कि जापान भारती से भारतीय समुदाय को एक मंच मिलेगा।

सस्नेह,

ए.पी.एस. मणी, जापान

-३-

भारती के प्रवेशांक को प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई, आप महानुभावों ने निश्चय ही एक नेक काम का शुभारम्भ किया है, इसके लिए मेरी ओर से बधाई स्वीकारें । आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आप लोगों का यह उत्साहजनक प्रयास अवश्य ही सफल रहेगा । जापान में निवासित भारतीय समुदाय का एक सदस्य होने के नाते मैं व्यक्तिगत रूप से इस पत्रिका के लिए कुछ कर सका तो सौभाग्यशाली रहूँगा । शुभकामनाओं के साथ उम्मीद करता हूँ कि भारतीय समुदाय को अपनी जड़ों से जोड़े रखने में यह पत्रिका कारगर रहेगी । भारतीय भाषाओं के जापानी सेवियों के बीच हमारी सांस्कृतिक एकता का प्रदर्शन करेगी ।

मेरा संबंध राजस्थान के जयपुर शहर से है, राजस्थानी में आपको लेख उपलब्ध कराने का प्रयास करूंगा । इन्हीं शुभकामनाओं के साथ एवं अगले अंक की प्रतीक्षा में ।

नरेश मुकुर सिंह, योकोहामा, जापान

महाविनाशकारी हानशिन भूकंप - एक रूप यह भी

जापान भारती का प्रवेशांक मिला। बड़ी प्यारी पत्रिका है, देख कर कितनी खुशी हुई । लेकिन प्रोफैसर हरजेन्द्र चौधरी की कलम से कोबे का नरक और सांस्कृतिक झटके पढ़ कर अजीब सी उलझन में पड़ गई।

एक ओर कड़वी खुशी हो रही थी क्योंकि जो - जो मैं ने उस सुबह देखा अनुभव किया, सब शब्दों में पिरोये हुए थे । अपने मुँह की बातों को अंजाम मिल गया । उधर उस सुबह की दहशत फिर लौटआयी । उस सुबह की सारी बातें लिख कर रखने का मन करने के साथ साथ सब कुछ भुला देने का भी मन कर रहा था ।

शादी के बाद कानसाई क्षेत्र में आकर आश्चर्य होता था कि तोक्यो की तुलना में यहाँ तो नहीं के बराबर भूकंप का झटका महसूस होता है । वास्तव में १७ जनवरी के भूकंप के इतने भयानक झटके महसूस करते हुए अनेक कानसाई वासियों के मन में यह बात कौंधी थी कि तोक्यो में आये विनाशकारी भूकंप के कारण इधर भी झटके महसूस किए जा रहे हैं ।

मेरे पति उस दिन सुबह साढ़े पाँच बजे उठने वाले थे । घड़ी बज उठी मगर वह अध्ययन की मेज़ पर नहीं बैठे । आलस्य को धन्यवाद है । नहीं तो ऊपर से चीज़े गिर कर उन के सिर पर टूट पड़तीं । इस तरह घायल होने न होने, जान गंवाने या बच पाने के बीच की लकीर कितनी धुंधली होती है । वह भी संयोग से खिंच गई तो खिंच गई ।

कोबे शहर में एक रिश्तेदार की पत्नी कुछ अजीब सी परिस्थिति में

- मिवाको कोएज़ुका -

अस्पताल में ही रहीं । नहीं तो वे स्वर्ग सिधार चुकी होतीं । क्योंकि उन का घर क्षण भर में ढह गया था । उन की एक बेटी को मलबों में से निकलने में पाँच घंटे लग गए थे । कोबे शहर में ही दूसरे रिश्तेदार की बिटिया अपराईट पियानो के पास सोती थी । मगर १७ जनवरी को वह स्कूली यात्रा पर थी । पड़ोस के घर में एक ग्रैंड पियानो गिर पड़ा जिस की चपेट में आ कर एक बेटी की जान गई । जानें बच भी गयीं तो दहशत के क्या-क्या रूप देखने पड़े । बच्चे भय के कारण नन्हें मुन्नों के जैसे व्यवहार करने लगे । हमेशा साफ़ - सुथरी रहने वाली गृहणियाँ बस हाथ पर हाथ धरे बैठी रहतीं । बड़े - बूढ़े वयोवृद्ध स्वप्निल लोक में रहने लगे ।

महाविनाशकारी हानशिन भूकंप से जान तो बच गयीं पर कितनों ने उस के बाद आत्महत्या कर ली । ८० वर्ष के एक बुजुर्ग ने इस आशय का पत्र छोड़ कर बहुत प्रसिद्ध बौद्ध मंदिर से १३ मीटर नीचे कूद कर आत्महत्या कर ली। भयानक भूकंप के डेढ़ महीने बाद । .. मैं यात्रा पर निकलता हूँ । दूर बहुत दूर जाऊँगा ।

७० वर्ष के एक वयोवृद्ध भूकंप के पौने दो महीने बाद कोबे के समुद्र तट पर जाकर पानी में डूबकर मर गए । उन का घर ढह गया था । स्थानीय कार्यालय द्वारा यह माना नहीं गया कि उन का घर क्षतिग्रस्त हुआ । परिणामतः सहायता की धनराशि उन्हें नहीं मिल सकी थी ।

४५ वर्ष के एक बेरोज़गार ने शरणार्थी गृह में पौने दो महीने बिताने के बाद स्थानीय कार्यालय की आठवीं मंजिल पर से कूद कर आत्महत्या कर ली । उन के बारे में यह पता चला किस वे दिन भर का समय शरणार्थी गृह में बिताने के बाद ढह गए घर पर कुत्ते के साथ रात काटते थे ।

६० वर्ष के अकेले कोबे निवासी, जिन का घर ढह तो नहीं गया मगर रहने लायक नहीं रहा, १७ जनवरी के दो महीने बाद दक्षिणी द्वीप क्यूशु तक पहुँच गए और वहीं वे चादर से फंदा बनाकर चीड़ वृक्ष पर लटक कर इहलोक छोड़ गए ।

६६ वर्ष के एक बीमार व्यक्ति रेलगाड़ी से टकरा गए और उनकी मृत्यु हो गई । वे बहुत समय से बीमार थे , रह रह कर बुदबुदाते थे कि मैं मर जाना चाहता हूँ। भूकंप से सप्ताह भर पहले ही रहने को घर मिला था, जो भूकंप में ढह गया । फिर उनके पैर पटरियों की ओर घूम गए ।

हानशिन भूकंप के दो महीने बाद तक दसेक व्यक्तियों ने आत्महत्या कर ली । और उन्हें तो इतिहास में लिखे जाने वाले महाविनाशकारी भूकंप का शिकार हुए ५५०० लोगों में गिना भी नहीं जाएगा। एक पुलिस कर्मी भूकंप के दो महीने बाद थक कर चूर हो गए और एक दिन ड्यूटी देते हुए दिल का दौरा पड़ने के कारणस्वर्ग सिधार गए । इन्हें भी उन ५५०० लोगों में नहीं गिना जाएगा ।

अवसान एक अध्याय का

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री प्रखर गांधीवादी मोरारजी देसाई नहीं रहे । उन्होंने इसी फरवरी में अपने जीवन के ९९ पड़ाव पार कर सोवें वर्ष में कदम रखा था। सारा देश अपने पितृ-पुरुष को शतायु होते देखने को उत्सुक था। किंतु १० अप्रेल को समय उन्हें हमसे छीन ले गया । भारतीय राजनीति के इस अनूठे व्यक्तित्व को भावपूर्ण श्रद्धांजलि-

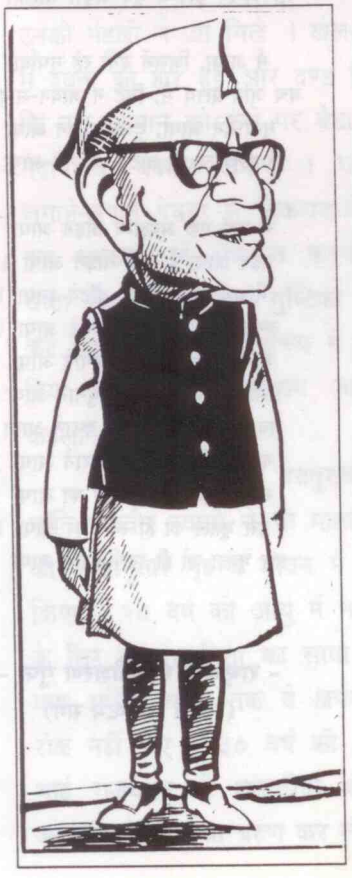

मोरारजी भाई रणछोड़जी देसाई का निधन भारतीय राजनीति के उस अध्याय के अंतिम पृष्ठ का अवसान है, जिस पर महात्मा गांधी के या गांधी युग के हस्ताक्षर थे । मोरारजी भाई की दृढ़ आस्था थी कि राजनीतिक जीवन में ईमानदारी, सच्चाई, व साफगोई का स्थान निश्चित है ।

आज के दौर में जब विश्व राजनीति सत्ता पर जकड़ के लिए तिकड़मी दाँव-पेंचों का चौसर बन कर रह गई है, मोरारजी का न रहना बड़े अवसाद को जन्म देता है । भारतीय राजनीति में उनकी छवि भले ही अक्खड़, हठी राजनेता की रही हो, इतिहास हमेशा उन्हें ऐसे अनोखे राजनीतिज्ञ के रूप में याद रखेगा जो अपनी धुन का पक्का था । जो सोचता था वही करता था । जिसका हर आदेश, हर नियम सर्वप्रथम अपने जीवन पर लागू होता था ।

२९ फरवरी १८९६ को तत्कालीन बम्बई राज्य के वलसाड़ जिले के माडेली गाँव में एक साधारण शिक्षक रणछोड़जी देसाई की अपढ़ पत्नी ने जिस शिशु को जन्म दिया उसी को आज दुनिया मोरारजी के नाम से जानती है ।

१९१५ में गांधी जी के दर्शन करने के बाद मोरारजी आजीवन गांधीवाद की सशक्त पहचान रहे । उन्होंने गांधी को पूजनीय मान कर आमजीवन से अलग कर देने के बजाय अपने जीवन में आत्मसात किया । गांधीवादी मूल्य उनके सनातन सरोकार थे ।

१९२५ में तली-भुनी चीजों का त्याग करने का, १९२६ में नमक छोड़ने का, और १९२८ में ब्रह्मचर्य पालन का जो प्रण उन्होंने लिया उसे देह छोड़ने तक निभाया। ९९ वर्ष की आयु में से ६२ वर्ष तक डिप्टी कलेक्टर से ले कर प्रधानमंत्री तक सत्ता और राजनीति के गलियारों के लम्बे सफर में उन्होंने अपने दृढ़, ईमानदार चरित्र की उजली चमक तनिक नहीं खोई ।

लचीली राजनीति में अनास्था उन्हें लोकप्रिय नेता भले न बना पाई हो किन्तु ईमानदार, पवित्रतावादी, कुशल प्रशासक तो वे थे इसके प्रमाण में दो उदाहरण ही पर्याप्त होंगे :

एक बार उन्हें अपने कलेक्टर की अगवानी के लिए रेलवे स्टेशन जाना पड़ा । स्टेशन पर कुली भाड़े आदि पर उस समय ३-४ रुपये खर्च हुए । उसका एक पर्चा बना कर उन्होंने कलेक्टर को भिजवा दिया । किसी अंग्रेज कलेक्टर से इस प्रकार का व्यवहार बड़े साहस की बात थी । आज तो ऐसा सोचना भी दुर्लभ है ।

प्रतिष्ठित अमरीकी पत्रकार सेमूर हर्श ने जब यह आरोप लगाया कि मोरारजी देसाई अमरीकी गुप्तचर एजेंसी सी आइ ए के एजेंट थे तो देश भर में किसी ने इस पर तनिक विश्वास नहीं किया । और अंततः बात यही निकली कि हर्श फिसल गए थे ।

अपनी शर्तों पर सार्वजनिक जीवन से जुड़े रहने वाले ऐसे निर्मल व्यक्तित्व का यूँ चला जाना इतिहास के एक अध्याय का अवसान ही तो है ।

जन मंगल का पर्व : राम नवमी

भारतीय संस्कृति के परम आदर्श को यदि एक शब्द में जानना हो तो वह है 'राम' । राम उदार जीवनमूल्यों के चरम प्रमाण का नाम है । रामनवमी उन्हीं श्रीराम की जन्मतिथि है जिनको मर्यादापुरूषोत्तम भी कहते हैं । यही वे राम हैं जो वास्तव में परब्रह्म हैं पर मनुष्य लीला करने के लिए रामचन्द्र के रूप में जन्म लेते हैं । यही वे राम हैं जो जन्म और मरण से परे हैं पर मनुष्य जाति के लिए आदर्श प्रस्तुत करने के उद्देश्य से दशरथनन्दन बनते हैं । इस लिए उनका जन्मदिन पृथ्वी पर अवतार लेने का दिन है ।

माना जाता है कि जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ने लगता है तब-तब धर्म की स्थापना करने के लिए भगवान अवतार लेते हैं । राम का अवतार दशानन रावण और उसकी राक्षसी सेना से त्रस्त धरती के उद्धार के लिए हुआ था। शायद ही कोई ऐसा भारतीय होगा जो श्रीराम की पावन कथा को न जानता हो । राम का कथा का सबसे प्राचीन वर्णन वाल्मीकि की रामायण में मिलता है । उसके बाद कितनी ही रामायणों की रचना हुई है और राम-काव्य लिखे गए हैं । राम का शासन ऐसा आदर्श था कि उसे रामराज्य के नाम से आज तक जाना जाता है । उन राम ने सभी संबंधों, कार्यों और विचारों में आदर्श स्थापित किए थे , मर्यादाएँ बनाई थीं - इसीलिए उनका जीवन मनुष्यमात्र के लिए अनुकरणीय माना जाता है ।

रामनवमी हर साल चैत्र मास की शुक्ल नवमी को मनाई जाती है । लोग रामजन्मोत्सव को बड़ी उमंग और उल्लास के साथ मनाते हैं । इस दिन व्रत, पूजन और कथा श्रवण का महत्त्व है। राम मंदिरों में भजन और गान प्रातः काल से ही प्रारम्भ हो जाता है ।

राम का जन्म दोपहर को हुआ था , जब न बहुत सर्दी थी न बहुत धूप । नवरात्र व्रत भी इसी दिन समाप्त किया जाता है । अतः राम जन्म के समय श्रीराम की प्रतिमा का विशेष पूजन होता है । सबसे बड़ा आयोजन अयोध्या में होता है , क्योंकि वहीं रामजन्म हुआ था।

राम की भक्ति का सन्देश लेकर आता है रामनवमी का पर्व । यह हमें अपने जीवन में आदर्शों को अपनाने की याद दिलाता है । और बताता है ह्रि मन को निर्मल रखने के लिए भगवान में आस्था रखना अति आवश्यक है ।

डा. शशि तिवारी
दिल्ली

मैं गढ़ने आया हूँ, नहीं तोड़ने आया

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया ।
जन-सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया ।।
सुख-शांति हेतु मैं क्रांति मचाने आया ।
विश्वासी का विश्वास बचाने आया ।
मैं आया उनके हेतु कि जो तापित हैं ।
जो विवश, विकल, बल-हीन, दीन-शापित हैं ।
हो जायँ अभय वे जिन्हें कि भय भासित है ।
जो काणप-कुल से मूक-सदृश शासित हैं ।

मैं आया, जिसमें बनी रहे मर्यादा ।
बच जाये प्रलय से, मिटे न जीवन-सादा ।।
सुख देने आया, दुःख झेलने आया ।
मैं मनुष्यत्व का नाट्य खेलने आया ।

मैं यहाँ एक अवलम्ब छोड़ने आया ।
गढ़ने आया हूं, नहीं तोड़ने आया ।।
मैं यहाँ जोड़ने नहीं, बाँटने आया ।
जगदुपवन के झंखाड़ छाँटने आया ।।
मैं राज्य भोगने नहीं, भुगाने आया ।
हंसों को मुक्ता - मुक्ति चुगाने आया ।
भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया ।
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया ।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया ।
इस भूतल को ही स्वर्ग का लाया ।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ।।

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त -
(साकेत - अष्टम सर्ग)

महावीर जयंती पर विशेष

भगवान महावीर और उनका दर्शन

जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने राजकुल में जन्म लेकर विश्व में आदर्शों के जो प्रतिमान स्थापित किए उसने जैन देव परम्परा की कीर्ति में चार चाँद लगा दिए। बिहार के तत्कालीन राजगृह नगर के राजा सिद्धार्थ और उनकी पत्नी त्रिशला के घर चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की १३वीं तिथि को जन्मे पुत्र को नाम दिया गया वर्द्धमान । निरंतर वृद्धि का प्रतीक, प्रचलित मान्यता के अनुसार वर्द्धमान के जन्म के साथ ही उस राज्य में धन-धान्य की वर्षा आरम्भ हो गई थी ।

वर्द्धमान ने बचपन में आम बालकों की तरह भाँति- भाँति की क्रीड़ाएँ कीं । पर उनके देवगुण से भिज्ञ देवताओं ने परीक्षा लेने की सोची । एक देवता ने बालक का रूप धरा और उनकी मंडली में आ मिले । खेल-खेल में देवता की हार हुई और दण्ड मिला कि वह वर्द्धमान को कंधे पर बैठा कर मैदान के चक्कर लगाए । चक्कर लगाते-लगाते देवता ने विकराल-विराट रूप धरकर उन्हें भयभीत करने की चेष्टा की तो वर्द्धमान ने मुष्टिका प्रहार कर देवता को पुनः बाल्यरूप में लौटा दिया । यहीं से वर्द्धमान महावीर कहलाने लगे ।

सृष्टि के अनेक देवपुरुषों की भाँति महावीर स्वामी ने भी माता-पिता की आज्ञानुसार गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया । २८ वर्ष की आयु में महावीर के सिर से माता-पिता का साया उठ गया । उसके बाद अधिक समय तक वे अपनी वैराग्य वृत्ति को रोक नहीं पाए । ३० वर्ष की आयु में उन्होंने बड़े भाई राजवर्धन से सांसारिक बंधनों से मुक्ति की अनुमति लेकर दीक्षा ग्रहण कर ली । उसके बाद वर्षों की कठोर तप-साधना ने महावीर को कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति कराई ।

इस ज्ञान का उपयोग महावीर स्वामी ने मानवमात्र को सन्मार्ग दिखाने के लिए किया । उन्होंने आत्म-कल्याण के जो मार्ग बताए उनमें प्रमुख स्थान पाँच महाव्रतों का है । अहिंसा, सत्य, अदत्त, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह के पंच महाव्रत ही आत्म सिद्धि के मूल मंत्र हैं।

अहिंसा अर्थात प्राणी मात्र के जीवन की रक्षा के साथ-साथ राग - द्वेष और विस्मृति से मुक्ति भी है ।

सत्य का अर्थ मात्र सत्य बोलने तक ही सीमित नहीं है, उस भाषा में प्रियता, तथ्य और पथ्यता का संगम आवश्यक है । अर्थात सत्यम् ब्रुयात, प्रियम् ब्रुयात , न ब्रुयात सत्यम् अप्रियम् ।

अपरिग्रह अर्थात् जीवन की न्यूनतम आवश्यकता से अधिक सामग्री का संग्रह न करना । इसका मूल अर्थ यह है कि मानव को सांसारिक माया के बंधन में उतना ही उलझना चाहिए जितना इस काया को सप्राण रखने के लिए आवश्यक है ।

इन पंच महाव्रतों का मनःसा, वाचा, कर्मणा पालन ही महावीर स्वामी के दिखाए मार्ग का सच्चा अनुसरण है। केवल ज्ञान प्राप्ति के बाद वर्षों तक जन-जन में ज्ञान का दीप जलाकर महावीर स्वामी ने सांसारिक आयु की दृष्टि से ७२ वर्ष का अलौकिक जीवन पूर्ण कर दीपावली की रात पावापुरी में मोक्ष प्राप्त किया । इस तरह सन्मार्ग व सम्यक ज्ञान का यह ज्योतिस्तम्भ दिव्य ज्योति में विलीन हो गया ।

मिलन जी. मेहता, तोक्यो

यू. आर. अनन्तमूर्ति, पु. ति. नरसिंहाचार्य, के. एस. नरसिंहस्वामी, गिरीश कार्नाड, चंद्रशेखर कंबार, पी. लंकेश और देवनूर महादेव जैसे सृजकों की साधना से समृद्ध कन्नड़ साहित्य के सुपरिचित हस्ताक्षर हैं । वे एक परंपरिक वैदिक ब्राह्मण परिवार के वंशज हैं । उनके पितामह पुजारी थे । पिता ने अलग राह अपनाई । गांव छोड़ कर बनारस और मुंबई की राह ली । इस तरह मुक्त कंठस्थ करने के साथ-साथ वारेन हेस्टिंग्स की 'इम्पीचमेंट' जैसा साहित्य भी यू. अनन्तमूर्ति ने बचपन से पढ़ा । ग्रामीण परिवेश में जन्मे अनन्तमूर्ति को चार मील पैदल चल कर स्कूल जाना और बिजली की रोशनी के बिना पढ़ना अभी तक याद है। टूटती परंपराओं, खण्डित होती मान्यताओं के बीच पले-बढ़े इस व्यक्तित्व पर महात्मा गाँधी और डा. राम मनोहर लोहिया की छाप बहुत गहरी पड़ी है । वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि 'गाँधी और लोहिया आज भी मेरे राजनीतिक प्रेरणा स्रोत हैं । गाँधी का आविर्भाव हमारी सदाब्दी की सबसे बड़ी धार्मिक घटना है।'

पो. यू. आर. अनन्तमूर्ति ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं को साधा है । चार दशक से लेखन में सक्रिय पो. अनन्तमूर्ति के तीन कविता संकलन, चार कहानी-संग्रह, तीन उपन्यास और साहित्य-आलोचना के चार खंड पठनीय हैं। इन दिनों साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पो. अनन्तमूर्ति ब्राह्मणवादी व्यवस्था की पुटन के प्रतिकार में रचे अपने उपन्यास 'संस्कार' से खासे प्रतिष्ठित हुए । हिंदी-अंग्रेजी में अनूदित इस उपन्यास पर कन्नड़ में बनी फिल्म 'संस्कार' भी काफी चर्चित रही । वैसे 'भारतीपुर' और 'अवस्थे' भी बहुत प्रसिद्ध हुए । लेखन को सामाजिक कर्म मानने वाले पो. अनन्तमूर्ति के विचार में भारत की सभी भाषाएं राष्ट्र भाषा हैं ।

प्रस्तुत है १९९४ के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित पो. यू. आर. अनन्तमूर्ति का संक्षिप्त परिचय, उद्बोधक विचार और चर्चित उपन्यास 'संस्कार' की समीक्षा ...

भाषा विकेंद्रीकरण का औज़ार है

- उडुपी राजगोपालाचार्य अनंतमूर्ति -

हम जिस महान विरासत के उत्तराधिकारी हैं उसे देखते हुए मुझे वर्तमान से बहुत असंतोष है । भाषा के ही मसले को लें, हमारे देश का तथाकथित शिक्षित वर्ग देश की भाषाओं को जिस तरह नष्ट कर रहा है वह चिंताजनक है । भाषा के मामले में भारत बहुत कुछ यूरोपीय देशों की तरह है । यूरोप में जिस तरह भाषाओं का वैविध्य है वैसा ही हमारे यहाँ भी मिलता है । हमारी भाषाओं का इतिहास अक्सर लंबा ही मिलेगा; जैसे कन्नड़ भाषा एक हजार साल पुरानी है । यह पूरे देश में नहीं बोली जाती फिर भी वह राष्ट्रीय भाषा कहलाने की हकदार है । यही बात भारत की सभी भाषाओं पर लागू होती है । तो भारत की सभी भाषाएं राष्ट्रीय भाषा हैं, यह नजरिया हमें विकसित करना होगा । भाषा विकेंद्रीकरण का अनिवार्य औजार है । बहुभाषी देश होना भारत के लिए एक सुसंयोग है, हमारे देश में इतनी अधिक भाषाओं का अस्तित्व किसी चिंता का कारण नहीं है बल्कि यह देश के हक में है । ये विविध भाषाएं विकेंद्रीकरण का तंतु हैं । अगर विकेंद्रीकरण नहीं होता तो विखंडन की भावना जन्मेगी । इस बात का साक्ष्य हम पंजाब और जम्मू-कश्मीर में पा चुके हैं।

मातृभाषा शब्द से मुझे एतराज है । यह एक पश्चिमी अवधारणा है । मैं इसकी जगह 'घर की भाषा' कहूंगा । मस्ति व्यंकटेश आयंगर तमिलभाषी थे किंतु उन्होंने कन्नड़ में उपन्यास लिखे। द.रा. बेंद्रे मराठीभाषी थे पर कन्नड़ में कविताएं लिखीं। कई भाषाओं का अस्तित्व में रहना एक सांस्कृतिक जरूरत है ।

भारत के बारे में कुछ अजीबोगरीब सच्चाइयां हैं । यहाँ आप जितने ज्यादा शिक्षित होंगे उतनी ही कम भाषाएं जानते होंगे । अगर आपकी शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी में हुई है तो आपको और कोई भाषा नहीं आएगी । वहीं कुली या अनपढ़ - लोग टूटी-फूटी ही सही पर दूसरी भाषाएं बोल सकते हैं। दुनिया में एकीकरण और मानकीकरण की जो अंधी दौड़ आज जारी है, उससे हम भाषाओं का पर्यावरण बिगाड़ रहे हैं । हमें वैविध्य को बचाए रखना चाहिए। आज हालत यह है कि कर्नाटक के लोग सिर्फ घर में कन्नड़ बोलते हैं बाकी सब जगह उनकी अंग्रेजी चलती है । मैं नहीं समझता कि ये लोग शेक्सपियर के बारे में या पश्चिमी सृजनात्मकता के बारे में या फिर अपनी ही भाषा की सृजनात्मकता के बारे में कुछ भी जानते होंगे । यह हालत दयनीय है । इस सांस्कृतिक दुर्दशा का कारण विश्व-व्यवस्था नामक एक चलताऊ धारणा है जो कास्मोपोलिटन संस्कृति से जन्मी है । हमें इस विचारहीन जड़हीनता का प्रतिकार करना चाहिए । बौद्धिक व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे समाज और राज्य-व्यवस्था पर आलोचनात्मक दृष्टि रखें । हमारी सदी महान सत्य-शोधकों की ऋणी है । सत्य खैरात में नहीं मिलता, न ही सिर्फ चंद उपयोगी धारणाएं ही सत्य होती हैं । सत्य के लिए जीना पड़ता है । मैं गांधी के बारे में सोचता हूं जिन्होंने सत्य और अहिंसा को एक बताया था । उन्होंने यह भी कहा था कि अगर उन्हें सत्य और अहिंसा में से एक को चुनना पड़े तो वे सत्य को ही चुनेंगे ।

धर्मयुग से साभार

संस्कार : भारतीय परम्परा का आधुनिक आकलन

- प्रो. हरजेन्द्र चौधरी -

यू. आर. अनन्तमूर्ति का युगान्तकारी माना जाने वाला कन्नड़ उपन्यास **संस्कार** तीन दशक पहले १९६५ में प्रकाशित हुआ था। प्रकाशन के पाँच वर्ष बाद इस पर फिल्म भी बनी। इस का हिंदी अनुवाद १९७७ में राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित हुआ।

अनेक दृष्टिकोणों से देखा जा सकने वाला यह उपन्यास इतना प्रामाणिक और यथार्थ-जीवन के इतना करीब है कि इसे 'धार्मिक' उपन्यास कह कर रफ़ा-दफ़ा नहीं किया जा सकता। मुझे ऐसा लगता है कि यह उपन्यास मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों और हमारी पारम्परिक नैतिकताओं के घनघोर द्वन्द्व की अभिव्यक्ति है।

भारतीय परम्परा में शक्तिशाली कामदेवता का अस्तित्व और अखंड ब्रह्मचर्य का महादर्श साथ-साथ मिलते हैं। शरीर और मन को सुखा डालने वाली तपश्चर्या तथा विलासिता की अथाह रसराशि के बीच से सामान्य स्वाभाविक जीवन-मार्ग की खोज - यह अटपटा, विकट भारतीय आदर्श मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों (भूख, काम, निद्रा, भय, अहम् आदि) के अति दमित या अति उच्छृंखल होने अथवा मनुष्य को निरन्तर द्वन्द्वग्रस्त रखने के लिए पर्याप्त हैं।

अनेक भारतीय आदर्श जीवन की स्वभाविकता का विरोध करते हैं। इस संदर्भ में यह उपन्यास पूरी भारतीय परम्परा का एक विश्वसनीय, आधुनिक आकलन प्रस्तुत करता है।

नारणप्पा (नारायण) नामक एक ब्राह्मण-विरोधी आचार-विचार वाले निःसंतान ब्राह्मण की मृत्यु के

पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि आख़िर ऐसे धर्मभ्रष्ट, परम्पराभ्रष्ट व्यक्ति की अंत्येष्टि का महादायित्व कौन लेगा।

गाँव का पूरा 'अग्रहार' क्षेत्र इस प्रश्न की सूली पर भूखा-प्यासा लटक जाता है। काशी में विद्या-प्राप्त महापंडित प्राणेशाचार्य धर्मशास्त्रों में इस आसन्न समस्या का हल खोजते-खोजते थक जाते हैं।

अंत्येष्टि किए बिना कोई ब्राह्मण भोजन नहीं कर सकता - इस नियम की सख्ती के कारण ही एक सीमा के बाद यह नियम टूटने लगता है। नियमों की शक्ति सीमित है और मनुष्य की जैविक जरूरतें एक सीमा के बाद किसी नियम से बँधी नहीं रह सकतीं - यह बात अग्रहर क्षेत्र के ब्राह्मणों के व्यवहार से प्रमाणित होती है।

शुरु में तो अ-ब्राह्मण नारणप्पा का अंतिम संस्कार करने के लिए उसके संबंधी गरुणाचार्य और लक्ष्मणाचार्य भी तैयार नहीं होते। कारण - क्षुद्रा को रखैल बना कर रखना, पत्नी का परित्याग, शराब-सेवन, माँस-भक्षण, माँ-बाप का श्राद्ध न करना, आदि-आदि।

और सब से बड़ा कारण ब्राह्मणों का यह व्यवहारिक भय - 'अगर हम बिना सोचे-समझे या जल्दी में इस का दाह संस्कार करना तय कर लें तो हम ब्राह्मणों को कोई भोज-श्राद्ध पर नहीं बुलाएगा यह निश्चित है' (पृष्ठ १८)।

प्राणेशाचार्य अपनी संशयग्रस्त राय देते हैं - 'नारणप्पा के द्वारा ब्राह्मणत्व त्याग देने पर भी ब्राह्मणत्व ने उसे नहीं त्यागा। उसका बहिष्कार नहीं किया गया। शास्त्रों के अनुसार चूँकि वह बिना बहिष्कृत हुए मरा है, इसलिए वह ब्राह्मण रहकर ही मरा है' (पृष्ठ २०)।

पर ब्राह्मणों का जो संशय प्राणेशाचार्य की इस राय से समाप्त नहीं हुआ वह संशय मृत्त नारणप्पा की रखैल चंद्री द्वारा अपने प्रेमी की अंत्येष्टि के लिए अपने स्वर्णाभूषण दे

देने की घोषणा के बाद एकदम समाप्त हो जाता है ।

अधिकतर ब्राह्मण मन ही मन नारणप्पा के संस्कार का दायित्व ले कर अचानक धनी होने के लालच से घिर जाते हैं । हजारों साल पुरानी परम्पराओं को ढहते केवल एक क्षण लगता है । त्याग-शिक्षा की अनेक सदियाँ लोभ के एक छोटे से क्षण के सामने घुटने टेक देती हैं ।

यह अप्रासंगिक नहीं है कि संस्कार पढ़ते हुए मेरे मन में एमिल ज़ोला के फ्रेंच उपन्यास 'नाना' तथा विलियम गोल्डिंग के अंग्रेजी उपन्यास ' लॉर्ड ऑव द फ़्लाइज़ ' की स्मृति बनी रही ।

बीस वर्ष से अपनी रुग्णा पत्नी भागीरथी की सेवा को अपना सौभाग्य समझने वाले अतिसंयत 'देवपुरुष' प्राणेशाचार्य भी भूख से पराजित हो जाते हैं। वे भी अन्ततः चंद्री के दिए केलों से तथा उसकी पुष्ट, गदराई देह से अपनी दोहरी भूख मिटाकर दो सत्यों के बीच त्रिशंकु की तरह लटक जाते हैं ।

गाँव में मौतों का सिलसिला चल पड़ता है, चूहे और मनुष्य रोज-रोज मरने लगते हैं । आसमान में दिन भर गिद्ध मंडराते रहते हैं । इस महामारी को भी अंधविश्वासी लोग नारणप्पा के कुकर्मों के किसी रहस्यमय परिणाम के रूप में देखते हैं।

कथा का दूसरा पक्ष यह है कि मृत्त नारणप्पा ने जीवन को जिस अकुंठ भाव से जिया, उस रूप से जीने की सचेत या अचेत ललक अधिकतर ब्राह्मणों के मन में मौजूद है । 'कामानुराणां ... न भयं न लज्जा' । (पृष्ठ १९) पर उन्हें भय भी लगता है और लज्जा भी आती है, इसलिए उनकी करनी-कथनी उनकी इच्छाओं के विपरीत चलती है । आचार और विचार का यह दोगलापन तमाम नैतिकताओं के आगे प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है । फलतः जीवन निरंतर संशयग्रस्त रहता है ।

धर्मशास्त्रों की प्रासंगिक विधियों और खोखली नैतिकताओं के गंधाते अवरुद्ध प्रवाह में निर्णय स्थगित हैं और पूरा गाँव मृत्युओं और मृत्युभय से खाली हो जाता है । शव सड़ रहा है और ब्राह्मण लोग निर्णय लेने में असमर्थ हैं । इसी स्थिति में अंततः शूद्रा रखेल चंद्री एक मुसलमान गाड़ीवान की मदद से नारणप्पा का अंतिम संस्कार कर देती है । निर्णय ठिठके रहते हैं, पर संशयग्रस्त जीवन, परम्पराओं, नैतिकताओं और संस्कारों को रौंदता हुआ आगे बढ़ जाता है । निर्णय रुके रहें, तो भी (असल में या उपन्यास में) जीवन कहाँ रुकता है!!

ज्ञानपीठ पुरस्कार

भारत के जाने माने उद्योगपति साहू शांति प्रसाद जैन और उनकी धर्मपत्नी रमा जैन के प्रयासों से भारतीय सृजनात्मकता को सम्मानित करने के लिए २२ मई १९६१ को ज्ञानपीठ पुरस्कार की नींव पड़ी । २९ दिसंबर १९६५ को मलयालम के कवि जी. शंकरकुरुप को प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा हुई । अब तक विभिन्न भारतीय भाषाओं के ३१ साहित्यकार ज्ञानपीठ से सम्मानित हो चुके हैं । इन सब साहित्यकारों के नाम न सिर्फ भारतीय साहित्य वरन विश्व साहित्य की पहचान हैं । जी. शंकरकुरुप, शिवराम कारंत, कुवेंपु पुटप्पा, डी. आर. बेंद्रे, मस्ती व्यंकटेश अयंगार, विनायक कृष्ण गोकाक, ताराशंकर वंद्योपाध्याय, आशापूर्णा देवी, तकषि शिवशंकर पिल्लै, अमृता प्रीतम, रघुपति सहाय 'फिराक', कुर्रतुल एन. हैदर, उमाशंकर जोशी, पन्नालाल पटेल, विष्णु सखाराम खांडेकर, वी.वी. शिरवाडकर, गोपीनाथ मोहंती, सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर, सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय', महादेवी वर्मा, नरेश मेहता, सरीखे मूर्धन्य साहित्यकारों के योगदान को सम्मानित करता ज्ञानपीठ पुरस्कार एक तरह से भारतीय साहित्य का नोबेल पुरस्कार बन गया है । इसकी संचालक संस्था 'भारतीय ज्ञानपीठ' ने इन सभी सम्मानित साहित्यकारों तथा अन्य लेखकों की रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित कर भारतीय भाषाओं के मध्य एक सदृढ़ सेतु स्थापित किया है ।

लेखकों-पाठकों से अनुरोध-
जापान भारती आपको कैसी लगी हमें अवश्य लिखिए । किसी भी भारतीय भाषाओं में आपके लेख, कहानी, किस्से, चुटकुले हम छापना चाहते हैं । तुरंत भेजें ।

मां का प्यार

वसन्त के मौसम में
खिलखालाते फूल
मां का प्यार ।
गरमी के मौसम में
गुलमोहर की बहार
मां का प्यार ।
बारिश के मौसम में
हरा श्रृंगार
मां का प्यार ।
पतझर के पत्तों के मौसम में
पत्तों की चरमर
मां का प्यार ।
जाड़े के मौसम में
चांदी का झरना
मां का प्यार ।

☆☆☆

अनुभव

बैठा बैठा खिड़की के सामने
देखता रहता प्रतिपल
नहीं उड़ाती हँसी सूखी पत्ती
पड़ोसिन के गिरने पर नीचे ।
फँसने पर हमजोली के
हो जाते इकट्ठे एक एक करके
पशु पक्षी, कीड़े-मकोड़े
सारे के सारे ।
सुनने में माहिर,
पदचाप हल्की से हल्की
खतरे का समाचार पहुँचाते
आनन-फानन
चीन्हते नहीं किसी को
अपना-पराया ।

अपने अपने मौसम

पेड़ नहीं होता आदमी
पालथी मार कर बैठ जाए
किसी एक झगह
हमेशा हमेशा के लिए ।
आदमी की नियति
चलते रहना हमेशा
नापते रहना
धरती, पानी, आकाश ।
पेड़ नहीं आदमी
ठीक समय पर खिले
बिखेरता रहे गंध
मौसम में ले आए बहार ।
मन की धुरी पर चलता हो आदमी
कभी बादलों में दिखता सुनहरा
आकाश
कभी सुनहरा सूरज, दहकता अंगार
मन की धरती में हर रोज बोता
नया बीज ।

☆☆☆

पराई धरती

टूटना, बिखरना, जुड़ना
गिरना, उठना, आगे जढ़ना
चलता रहता हर रोज ।
खाना पीना हँसना इतराना
सुख दुःख में समभोगी होना
नहीं हो पाया अब तक
मिलते बिछुड़ते भांत-भांत के लोग
कहते रहते अपनी अपनी
गाते रहते बेसुरा राग ।
कुलबुलाते रहते मेरे हाथ
करने को कुछ नया
करने नहीं देती कुछ भी भाषा पराई
हर क्षण झेलता रहता
कभी दुःख कभी सुख
नपती रहती धरती पराई ।

अनाम झील के प्रति

घेरती है जब उदासी
बात करने को न होता
एक भी जन पास मेरे
झील के मैं पास जाता
और उससे बात करता
आपबीती हूँ सुनाता ।

झील के मैं पास जाता
उस समय भी बहुत ज्यादा
खुशी का सागर उमड़ता
पर किसी से कह न सकता
कुछ नहीं बोलता तब
समझ लेती झील सब कुछ ।

आपदा आती अचानक
झील के ऊपर कभी जब
कौन सी ताकत न जाने ।
मजबूर करती है मुझे
पास जाऊँ, देख आऊँ
और कुछ कहने न पाऊँ ।

कौन जाने किस जनम में
झील से नाता जुड़ा था
नाता जुड़ा था एक ऐसा
नहीं टूटेगा कभी भी
पास में उसके रहूं मैं
या कहीं मैं दूर जाऊँ ।

- प्रो. ओमप्रकाश सिंहल -

आर्ट फॉर क्राई

- अरुणा नारलीकर

भारतवर्ष के लाखों-करोड़ों गरीबी से लाचार बच्चों के उज्जवल भविष्य के एक सुनहरे स्वप्न को जब रिपन कपूर ने अपने छः मित्रों के साथ, आफिस के लंच समय में वास्तविकता का रूप देने का निश्चय किया तब उनके के पास थे केवल ४९ रूपये । हर एक की ओर से सात-सात रुपये जमा करके जब उन्होंने काम शुरु किया तब कोन सोच सकता था कि कुछ ही वर्षों में हजारों लोग उनके हाथों को सहारा देकर इतना मजबूत बना देंगे कि आज छः लाख बच्चों का जीवन बेहतर बनाने में, सो से अधिक संस्थाएँ अपना कार्य सुचारु रूप से चलाने में उनकी मदद ले रही हैं।

क्राई (चाइल्ड रिलीफ एण्ड यू) नाम से अपनी पहचान बनाने वाली इस संस्था का पंजीकरण १९७९ में एक सार्वजनिक ट्रस्ट के रूप में किया गया । किसी बड़ी अंतर्देशीय संस्था या किसी बड़े व्यक्ति के नाम का सहारा लिये बिना इतने बड़े स्तर पर कार्य कर पाना बून्द-बून्द से सागर भरने का एक आदर्श उदाहरण है । इस सफलता के पीछे है क्राई का यह विश्वास कि यदि हममें से प्रत्येक व्यक्ति थोड़ी सी मदद करे - पैसे, समय, योग्यता, संसाधन या कुछ और भी दे सके, तो उन बच्चों को जीवन की कई मूलभूत जरूरतों को पूरा किया जा सकता है ।

विज्ञापनों, कैलेंडरों या ग्रीटिंग कार्डों के माध्यम से सभी वर्ग के लोगों को इस सामाजिक कार्य का हिस्सेदार बनाने का काम क्राई ने बड़ी सफलता से किया है । पढ़े-लिखे मध्यम या उच्च वर्ग के ऐसे कितने ही लोग हैं जो देश के आर्थिक रूप से पिछड़े और दुःखी वर्ग के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में, उन्हें अक्षर ज्ञान देने और बेहतर जीवन दिलाने में हाथ बटाँना चाहते हैं। परन्तु उन्हें इसके लिए सही रास्ता और सही संस्थान दिखाने वाला नहीं मिलता ।

इन्हीं सब गरीब बच्चों, संस्थानों और हम जैसे नागरिकों को जोड़ने वाली कड़ी है क्राई । कला और कलाकारों के साथ क्राई की पहचान

मुझे भरोसा है कि जब मैं
हो जाऊँगा बड़ा,
नहीं भूलूँगा,
कि मैं भी कभी बच्चा था।

मीतेश पी०, आयु - 13 वर्ष

बहुत पुरानी है । ग्रीटिंग कार्ड छापने के लिए छोटे बड़े अनेक कलाकारों ने अपनी कलाकृतियाँ उपहार स्वरूप दी हैं। लाखों रुपये इन कार्डों की बिक्री से प्राप्त होते हैं । इसके अलावा समय-समय पर विशेष कार्यक्रम भी किये जाते हैं ।

समसामयिक भारतीय कलाकारों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी 'आर्ट फार क्राई' पहले १९८८ में और अब जनवरी १९९५ में आयोजित की गई । इस वर्ष इस प्रदर्शनी में ५१ कलाकारों ने भाग लिया जिनमें अपर्णा कौर, राम कुमार, मनु पारेख, माधवी पारेख, अंजलि इला मेनन, वसुंधरा तिवारी, सुनील दास, नलिनी मलानी, बद्रीनारायण, जहाँगीर साबवाला, रज़ा इत्यादि जैसे सुप्रसिद्ध नाम शामिल हैं । इनमें से अधिकतर कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों या उन से मिलने वाले धन को 'क्राई' के द्वारा जरुरतमंद बच्चों की मदद के लिए समर्पित किया । 'शिशु एवं उसका विश्व' यह प्रस्तावित विषय था परन्तु इसका कोई भी बंधन या आग्रह कलाकरों पर नहीं था। कुछ ने इस प्रदर्शनी के लिए विशेष चित्र बनाए और कुछ ने पहले से तैयार चित्रों में से एक या दो का चयन किया । यह प्रदर्शनी पहले ३० जनवरी से ५ फरवरी तक बंबई की जहाँगीर आर्ट गैलरी में हुई और फिर १७ फरवरी से २३ तक दिल्ली की ललित कला अकादमी में ।

> क्राई के पहले वर्ष में रिपन और उनके साथियों ने लंच ब्रेक में ३०,००० ग्रीटिंग कार्ड बेचकर ३०,००० रुपए जमा किए थे । उस समय क्राई का दफ़्तर था एक खाने की मेज और एक दृढ़ संकल्प !

भविष्य

कह सकते हैं आप कैसे कल के बारे में कुछ,
हो सकता है। कल सुखमय भी और दुखमय भी।
कहते हैं ऐसा सभी —
अहो भाग्य! मेरे मैं नहीं सोचता ऐसा कभी।

कीजिए आज ही, जो कर सकते हैं, जो भी, अभी,
ताकि भविष्य सुंदर हो! सुखमय हो!
कीजिए सहायता अवश्य किसी की भी,
दीजिए उसे अवश्य अपनी सहानुभूति।

करते हैं अगर सहायता आप किसी शिशु की
रखेगा वह याद आपको हमेशा के लिए —
और एक बार फिर से कुछ ऐसा ही भला कीजिए
किसी अन्य बच्चे की सहायता कीजिए।

करते हुए ऐसा आप —
शुरू करते है एक सिलसिला
जो विश्व भर के देशों में भी होगा
एक युगांतकारी घटना

किया गया आप का यह छोटा सा मगर -
महान कार्य छोड़ेगा दूसरों पर एक अमिट छाप।
कल के लिए न छोड़िए कभी कुछ भी -
दुखों को समाप्त करने के लिए कर सकते हैं जो -
कर दीजिए अभी ही ! आज ही! आज ही ! आज ही!

अवनी शाह, आयु - 11 वर्ष

'क्राई' की १९७९ से अब तक की यात्रा की सबसे दुःखद घटना है उसके संस्थापक सदस्य रिपन कपूर का चालीस वर्ष की आयु में अकस्मात निधन । उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने एवं क्राई के जीवन के पंद्रहवें वर्ष को एक यादगार बनाने के लिए यह प्रदर्शनी आयोजित की गई । चंदा एकत्र करने के अलावा 'आर्ट फार क्राई' का प्रमुख उद्देश्य वंचित बच्चों की अन्यायपूर्ण स्थिति के प्रति लोगों के जागरूक बनाना भी है । अतः प्रदर्शनी में वंचित बच्चों से संबंधित मसलों और बाल-मजदूरों, जनजातीय बच्चों, तथा शिशु बालाओं से संबंधित माड्यूल भी प्रदर्शित किया गया । क्राई की सहभागी संस्थाओं के बच्चों द्वारा बनाए गए कुछ चित्र भी इस प्रदर्शनी में बिक्री के लिए रखे गए । इन चित्रों से प्राप्त धनराशि उन्हीं संस्थाओं को दी जाएगी जिसे उनके बच्चों के मनोरंजन पर खर्च किया जाएगा ।

रिपन कपूर अपनी मृत्यु के बाद भी क्राई परिवार के लिए एक सुनहरा सपना और उसे साकार करने का सही और सही सीधा रास्ता छोड़ गया । लोगों में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यकता है दूसरों के प्रति सहानुभूति और सबल इच्छाशक्ति की । क्राई के पहले वर्ष में रिपन और उनके साथियों ने लंच ब्रेक में ३०,००० ग्रीटिंग कार्ड बेचकर ३०,००० रुपए जमा किए थे । उस समय क्राई का दफ़्तर था एक खाने की मेज और एक दृढ़ संकल्प ! आज अनेक छोटे बड़े शहरों में क्राई के दफ़्तर हैं, हजारों लोग सेवाभाव से मदद कर रहे हैं, लाखों बच्चे अपना जीवन सुधार रहे हैं , करोड़ो रुपयों की सहायता सही जगह पहँचाई जा रही है । और इनके पीछे क्राई का सरल, स्पष्ट संदेश है - **'आप परिवर्तन ला सकते हैं।'**

क्राई का पता : The Resource Department, CRY - Child Relief and You, Anand Estate, 189-A, Sane Guruji Marg, Bombay 400011, INDIA

WorldWide Web : www.acsu.buffalo.edu/~kripa/cry.html

रंगा सियार

एक बार एक सियार भोजन की तलाश में भटक रहा था। वह दिन उसके लिए बहुत बुरा था । उसे कुछ खाने के लिए भी नहीं मिला। थका - माँदा, भूखा-प्यासा काफ़ी देर तक चलता रहा। अंत में वह शहर की गलियों में जा पहुँचा । उसे पता था कि शहर में घूमना ठीक नहीं है । लेकिन वह इतना भूखा था कि इस खतरे का सामना करने को भी तैयार हो गया।

'मुझे खाना तो मिलना ही चाहिए' वह अपने आप फुसफुसाया, 'लेकिन आशा है कि कुत्तों और आदमियों से मेरा सामना नहीं होगा।' तभी एकाएक उसे खतरे का बिगुल सुनाई दिया । कुत्ते भौंक रहे थे । वे उसके पीछे लग गए । सियार कुत्तों से पीछा छुड़ाने के लिए खूब तेज़ भागा। अचानक वह रंगरेज के घर में घुस गया । नीले रंग से भरा एक टब आंगन में पड़ा था । दौड़ते हुए सियार टब में जा गिरा । कुत्ते सियार को न पा कर निराश लौट गए। उतनी देर सियार टब में ही छिपा रहा । जब उसे विश्वास हो गया कि कुत्ते चले गए हैं तब वह धीरे धीरे सरक कर टब से बाहर निकल आया । अपने आप को नीले रंग से रंगा देख कर उसे आश्चर्य हो रहा था । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे । वह आदमी और कुत्तों की नजर से बच कर जंगल में पहुँच जाना चाहता था । सो वह जल्दी ही जंगल की ओर लौट गया । उसे देख कर सब जानवर मारे डर के भाग गए । इस रंग का पशु उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था । सियार ने देखा कि वे उससे डरे हुए हैं । बस, उसने तुरत ही इस बात से लाभ उठाने की योजना बना ली । 'तुम भाग क्यों रहे हो ?' वह चिल्लाया -'आओ, मेरे पास आओ और मेरी बात सुनो ।'

भागते जानवर रुक तो गए लेकिन उसके नजदीक जाने में झिझक रहे थे । 'आओ, अरे भाई, सब आओ', सियार चिल्लाया - 'अपने मित्रों को भी बुला लाओ । मुझे तुम्हें कुछ बहुत ही महत्व की बातें बतानी हैं ।'

एक-एक कर के सब जानवर सियार के नजदीक आ गए। शेर, हाथी, बंदर, खरगोश, हिरण और बहुत से दूसरे जानवर उसके चारों ओर आ कर खैड़े हो गए ।

'तुम्हें मुझसे डरने की आवश्यकता नहीं,' नीले सियार ने कहा -'तुम मेरे साथ सुरक्षित हो । ईश्वर ने मुझे तुम्हारा राजा बना कर भेजा है । तुम सबको मैं राजा का संरक्षण देता हूँ ।'

पशुओं ने उसके कहे पर विश्वास कर लिया । सबने झुक कर उसे सलामी दी । 'हे राजन, हम सब आपको अपना राजा मानते हैं । अब मेहरबानी कर के आप बताइए कि हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं ?'

'तुम्हें अपने राजा की देखभाल खूब अच्छी तरह से करनी चाहिए', नीले सियार ने कहा, 'राजा के लिए अच्छा-अच्छा भोजन लाना चाहिए।'

'अवश्यमेव राजन',जानवर बोले,'हम अपने राजा के सुख के लिए कुछ भी कमी उठा न रखेंगे । इसके अलावा बताइए कि हम आपके लिए क्या कर सकते हैं ?'

'तुम्हें अपने राजा का वफादार होना चाहिए,' नीले सियार ने उत्तर दिया,'तभी राजा शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा कर सकेगा ।'

नीला सियार राजा की तरह रहने लगा। पशु नीले सियार के लिए तरह-तरह का बढ़िया भोजन लाते और उसकी खूब सेवा करते ।

एक दिन राजा अपने दरबार में बैठा हुआ था कि कुछ दूर पर शोर सुनाई दिया । शोर कुछ और नहीं था बल्कि सियारों के दल की 'हुआ-हुआ' थी । बहुत दिनों से सियार ने अपने लोगों की आवाज नहीं सुनी थी । वह भूल गया कि वह अब राजा है, उसने सिर उठाया और 'हुआ-हुआ' करने लगा ।

अब तो सारे जानवर जान गए कि वह कौन है । वह तो बस अदना सा सियार था । उसने सबको धोखा दिया था । उन सब को बहुत गुस्सा आया और वे उसे मारने दौड़े । लेकिन सियार तो पहले ही भागने लगा था । वह तेजी से भागा और भागता ही चला गया - तेज, और तेज । तब कहीं वह अपनी जान बचा पाया ।

(पंचतंत्र से)

সৎপাত্রী

শুনতে পেলাম দিল্লী গিয়ে
দিচ্ছ নাকি ছেলের বিয়ে ?
বৌ করে নাও রামধনুকে
পুএ তোমার থাকবে সুখে ।
রং কীরকম ? বেশ ঝাঁজালো ,
লক্ষ ওয়াটের নিয়ন আলো !
আর যেন ভাই শ্রীমুখখানি
রম্ভা + ভেনাস + নূরজাহানি ।
তন্বী দেহ, যদিও পেশী
সাধারনের একটু বেশী ।
আসল কথা কী তা জানো,
মেয়ের হবিই চোর ঠ্যাঙানো ।
প্রনাম-টনাম ? ভয়ই করে
ঠ্যাঙের খোঁজে ঝাঁপিয়ে পড়ে !
সদাই হাসি মুখটি জুড়ি
দিচ্ছে যেন কে সুড়সুড়ী –
আর, হ'লে joke, হোক না বাসি,
বাপরে সে কি অট্টহাসি !
গান ? জদি গায়, তার রেওয়াজে
পাড়ার বুকে ডঙ্কা বাজে ।
বিদ্যে ? মেয়ের বায়োডাটা
সেরেফ Ph.d - তেই আঁটা !
গনিত, physics, বঙ্গভাষা
ইত্যাদিতে মগজ ঠাঁসা !
রান্না ? শোনো, chemistry তে
খেতাব পেয়েই আচম্বিতে
যেই না বোঝা, রসনাকে
রসায়নই খেলিয়ে থাকে,
ফেলল গ'ড়ে, বলিহারি,
কিচেন তো নয়, ল্যাব্রেটারি ।
সেইখানে তার ফর্মূলাত
রাঁধছে এখন আলুভাতে ।
খাবে না ? কার ক'টা মাথা ?
পিষবে জেনো ঘুরিয়ে জাঁতা ।
হাজার হলেও ক্ষত্রিয় তো
ক্রোধ আজও ওতপ্রোত ।
যক্ষপতি সেই যে কুবের,
আদিপুরুষ রামধনুদের ।
আত্মীয় ? হ্যাঁ, মেয়ের পিশে
মাঝ বয়েসে হারিয়ে দিশে
বর্তমানে বাস শ্রীঘরে
সাহের ভবা ভ্যাঙ্কুভরে ।
যাহোক, কেমন লাগলো শুনে –
স্বীকার করো, রূপে গুনে
এমন একটা পাত্রী পেলে
বর্তে যাবে তোমার ছেলে ।

—

Mr Kalyan Dasgupta
25151 BrookPark Road #1816
North Olmstead
Ohio 44070

आपका स्वास्थ्य

खाने पीने की कुछ वस्तुऐं तो अमृत तुल्य होती है लेकिन विपरीत स्वभाव की वस्तु के साथ मिल जाने पर जहर का काम कर सकती हैं । कुछ द्रव्य परस्पर गुण-विरूद्ध, कुछ द्रव्य संयोग-विरूद्ध, कुछ द्रव्य संस्कार में देश काल और मात्रा आदि से विरूद्ध होते हैं । परस्पर विरोधी खाने पीने का सेवन न करने से अनेकानेक रोगों से बचा जा सकता है ।

हानिकारक या अहितकारी संयोग :-

दूध के साथ - दही, नमक, इमली, खरबूजा, बेलफल, गुड़, तेल ।
दही के साथ - खीर, दूध, पनीर, गर्म खाना, शाक, खरबूजा, मूली ।
खीर के साथ - खिचड़ी, कटहल, खटाई, शराब आदि ।
शहद के साथ - मूली, अंगूर, गर्म वस्तुऐं आदि ।
गर्म जल के साथ - शहद
घी के साथ - शहद

हितकारी संयोग :-

खरबूजा के साथ शक्कर
आम के साथ दूध
केले के साथ इलायची
खजूर के साथ दूध
इमली के साथ गुड़
अमरूद के साथ सौंफ
चावल के साथ दही
मूली के साथ मूली के पत्ते
गाजर के साथ मेथी का साग

होली रे होली, पुरणाची पोळी

सामग्री - २५० ग्रॅं. महीन आटा या मैदा, २५० ग्रॅं. चने की दाल, २५० ग्रॅं. गुड़ या चीनी, ५ ग्रॅं. छोटी हरी इलायची, आधा जायफल, थोड़ा तेल और असली घी ।

पुरण बनाने के लिए, पहले चने की दाल धोकर नरम गलने दीजिए । पानी निकालकर गुड़ या चीनी डालिए । आंच पर ही रहने दिजीए । दाल सूखने पर अच्छी घिस दीजिए । इलायची दाने - जायफल काट कर डालिए । यही पुरण है ।

अब आटे में चार चम्मच (बड़े) तेल डालकर मुलायम गुंथिये । नीबू जितने गोले बनाइये । एक गोला थोड़ा फैलाकर पुरण का नीबूसे बड़ा गोला उसमें भरिये । आटे की यह छोटी पूड़ी सब तरफ से बन्द कीजिए । अब यह मीठा पंराठा पतला बेल कर सेंक लें । उतारते समय पंराठे पर असली घी छोड़िये । घी या दूध के साथ परोसें ।

- माधुरी लिमये -